सत्य एँव अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लेमेन इवैंजलिकल फैलोशिप। (LEF,Chennai)

नवम्बर-दिसम्बर, 2003

मरने को पैदा हुआ

क्रिसमस का मसीह

क्रिसमस का खास विषय यह नहीं कि यीशु इस संसार में आये बल्कि वह क्यों आये? उनके जन्म में कोई उद्धार नहीं था। न ही उनके निष्पाप 'जीवन में', जो उन्होंने जीया, लोगों को उद्धार देने की सामर्थ थी। उनका उदाहरण, जो त्रुटिहीन था, लोगों को उनके पाप से नहीं छुड़ा सकता था। यहाँ तक की उनकी शिक्षा उपदेश, सर्वोच्च सत्य जो लोगों पर प्रकट किया गया, हमें हमारे पाप से नहीं बचा सकता था। हमारे पाप के लिए दाम चुकाना था। किसी को मरना था। केवल यीशु ही ऐसा कर सकते थे।

यह सत्य है कि यीशु धरती पर पिता परमेश्वर का प्रकाशन देने के लिए आये। वह सत्य की शिक्षा देने के लिए आये। वह सारे नियमों को पूरा करने के लिए आये। वह सारे नियमों को पूरा करने के लिए आये। वह अपना राज्य देने आए। कैसे जीना चाहिए, हमें यह दिखाने आये। परमेश्वर के प्रेम को हमारे ऊपर प्रकट करने के लिए आये। वह ज़रूरतमंदों की सहायता करने के लिए आये।

लेकिन यह सब कार्य उनके मुख्य ध्येय में खास स्थान नहीं रखते। यह सब वह बना मनुष्य के

पृष्ठ २ पर...पैदा हुआ।

मृत्युंजय ख्रिस्त
ON LINE

By Email:
post@lefi.org

At our Web Site:
http://lefi.org

लूका (२:१६-१८) ''वे शीघ्र जाकर मरियम और यूसुफ के पास पहुंचे और उन्होंने उस बच्चे को चरनी में लेटा हुआ पाया। यह देख कर उन्होंने वह बात प्रकट कर दी जो इस बच्चे संबन्ध में उनसे कही गई थी। और सब लोगों ने उन बातों को सुनकर जो चरवाहों ने उनसे कहीं, आश्चर्य किया।''

इन गड़रियों को अपने भेड़ों के झुण्ड को आधी रात में छोड़ना पड़ा। यह त्याग था जो उन्हें मसीह को खोजने के लिए करना पड़ा। यह झुण्ड उनकी सबसे मूल्यवान धरोहर थी। झुण्ड की देखभाल ज़रूरी थी। लेकिन इन लोगों ने मसीह को खोजना अधिक ज़रूरी समझा। उनका एक ही लक्ष्य था।

आजकल लोग भावुक और अस्थिर हैं। उनका जीवन में कोई लक्ष्य नही है। यदि आपका कोई लक्ष्य है, यदि आपके जीवन में स्वर्गीय उद्देश्य है, तो इस बात से कोई अन्तर नहीं पड़ता कि आपके साथ केवल एक, दो या तीन लोग सहायता के लिए हैं। आपको परमेश्वर की ओर से मिले उद्देश्य को पूरा करने के लिए एक बड़ी मंडली की आवश्यकता नहीं है। सच तो यह है, जितनी बड़ी मंडली, उतनी है अधिक गड़बड़ी, झगड़ा और फूट वहाँ देखा जाता है।

इन गडरियों के पास एक उद्देश्य था और आधी रात में ही उसे पूरा करना था। गड़रियों को उसी समय उठकर इस दिव्य कार्य को पूरा करना था जो था, 'मसीह की खोज'।

जब स्वर्गदूत चले गए तो गडरियों ने क्या कहा? ''आओ, सुबह तक प्रतीक्षा करते हैं। हमें अपने झुण्ड की देखभाल करनी है।'' यदि आप यह स्वभाव रखेंगे, तब आपके सारे जीवन में कोई कार्य नहीं होगा। मैंने कभी कल पर भरोसा नहीं किया, मैंने आज मिले मौके को आज उपयोग करना सीखा है। बाइबल 'आज' शब्द से भरा है। मन फिराने के विषय को लीजिए। यदि हम अपने मन फिराव को टाल देंगे, यदि परमेश्वर द्वारा हमसे अपेक्षित आज्ञापालन को टाल देगें, और हम अपने सारे जीवन को बरबाद कर चुके होंगे। आज का दिन परमेश्वर द्वारा दिये गए मौके का दिन है। क्रूस के सामने जाओ, अपने स्वभाव को क्रूस पर रख कर कहो, ''प्रभु, यह अभी होना चाहिए।''

जब मैंने अपना जीवन प्रभु यीशु को समर्पित किया, वह समपूर्ण समर्पण था। यदि खेलकूद मार्ग में आड़े आये तो वे अलग कर दिये गए। यदि लड़कियाँ मार्ग में आड़े आयीं, वे अलग कर दी गईं। यदि कोई और बात मेरे और प्रभु के वार्तालाप के बीच में आई, तो मैंने उन्हें एकदम अपने जीवन से अलग कर दिया। कुछ भी मुझे मेरे उद्देश्य से भटका नहीं सका। मेरा लक्ष्य था 'यीशु का सादा शिष्य बनना' कुछ भी मुझे भटका नहीं सका।

लेकिन आजकल मसीहियों में कोई तकाज़े की भावना नहीं है। उनके जीवन में कोई लक्ष्य नहीं है। वे सोचते हैं कि वे काम को और मौकों को ऐसे ही टाल सकते हैं, देरी कर सकते हैं, या कल पर छोड़ सकते हैं, जब तक की जिन्दगी बरबाद हो चुकी होगी।

यदि अनन्तकाल महत्वपूर्ण है तो हमें दिव्यप्रकाशन का एकदम आज्ञापालन करना चाहिए, जो हमें अनन्त परमेश्वर ने दिया है, लूका (२:१५) 'और ऐसा हुआ कि जब स्वर्गदूत उनके पास से स्वर्ग को चले गए तो चरवाहे आपस में कहने लगे, ''आओ हम सीधे बैतलहम जाकर इस बात को जो हुई है और जिसे प्रभु ने हम पर प्रकट

पृष्ठ २ पर...क्रिसमस का..

पृष्ठ १ से...क्रिसमस का..

किया है, देखें।'' ' क्या गडरियों ने स्वर्गदूतों द्वारा पाए दर्शन पर यह कहते हुए संदेह किया, ''क्या हम सपना तो नहीं देख रहे थे?'', नहीं। उन्होंने परमेश्वर पर भरोसा किया और उसके अनुसार कदम उठाया। बाइबल हमें यह सिखाता है कि, 'अब्राहम ने परमेश्वर पर भरोसा किया और वह उसके लिए धार्मिकता गिना गया।' उसने इस भरोसे के अनुसार कदम उठाया। जब परमेश्वर ने अब्राहम को कोई कदम उठाने को कहा तो उसने विश्वास के साथ कदम उठाया। इस प्रकार गडरियों ने विश्वास के साथ कदम उठाया। कृपया याद रखिए कि परमेश्वर से प्रकाशन का पालन करने के लिए विश्वास की आवश्यकता है।

तो परमेश्वर से हमने क्या प्रकाशन पाया है? हमारे सामने परमेश्वर का वचन है, यह कह रहा है, ''सारे संसार में जाओ और सभी प्राणियों को सुसमाचार दो।'' परमेश्वर का वचन सादा व स्पष्ट है -क्या हम उसका पालन कर रहे हैं? वह कहते हैं, '' तुम चुनी हुई पीढ़ी हो, एक राजकीय याजक, एक खास लोग'' एक याजक हो, वक्ता, ऐसे जो प्रार्थना कर सकें, ऐसा व्यक्ति जो अपने देश के लिए परमेश्वर के सामने रोये। क्या तुमने इसके लिए कदम उठाया है?

आइए, उन गडरियों की सादगी से हम कुछ सीखें, ' प्रभु ने हम पर यह प्रकट किया है, आओ इस उद्धारकर्ता को देखें। आओ अब चलें।' हम लोगों को, जिन्हें बौद्धिक माना जाता है, हम सोचते हैं काम को पूरा न करना, उच्च स्तर की बौद्धिकता का भाग है। हम उस सादगी को खो बैठ हैं। हम घमंडी बन गए हैं। यह हमारा घमंड है जो हमें अलग कर और अधिक आत्मनिर्भर बना देता है। हम मसीह के शिष्य दिखने की बजाय बाकी सबकुछ दिखना चाहते हैं। यदि आप इस घमंड का इलाज नहीं करेंगें तो अपने जीवन में, परमेश्वर द्वारा दिये गए उद्देश्य को पूरा नहीं कर पाएंगें। गडरियों को देखो, लूका (२:१६-१८) ''वे शीघ्र जाकर मरियम और यूसुफ के पास पहुंचे और उन्होंने उस बच्चे को चरनी में लेटा हुआ पाया। यह देख कर उन्होंने वह बात प्रकट कर दी जो इस बच्चे के सम्बन्ध में उनसे कही गई थी। और सब लोगों ने उन बातों को सुनकर जो चरवाहों ने उनसे कहीं, आश्चर्य किया।'' क्या तुम्हारे अन्दर मसीह को देखकर ऐसा अश्चर्य होता है? बहुत से लोगों ने परमेश्वर के वचन से अद्भुतपन को दूर कर उसे आहों, बड़बड़ाने, अविश्वास और निठ्ठल्लेपन से भर दिया है।

आइए इस बात पर ध्यान दें कि हम किसी दूसरे ही मसीह को न दर्शाएँ। जब गडरियों ने प्रभु को देखा, वे सुसमाचार के विस्मय से भर गए थे। आज तक भी प्रभु ने सुसमाचार को बेस्वाद प्रकाशन बनाने को नहीं छोड़ा है। जब आप यीशु को लोगों में बाँटते हो, तो वह स्वंय को लोगों पर प्रकट करते हैं। यीशु लोगों से बात करते हैं। आज भी वह लोगों के जीवन में काम कर रहे हैं। जब आप दूसरों से मसीह को बाँटेंगे, मसीह के प्रकाशन का विस्मय आप देखेंगे। आधुनिक, शिक्षित दिमाग, अपने संदेह और अविश्वास द्वारा, सुसमाचार के विस्मय को कम करने की कोशिश करता है। यदि कोई आदमी चाँद पर जाता है, तो हम विस्मय करते हैं लेकिन यीशु मसीह हमारे लिए अब बासी हो गया है।

समय आ गया है कि हम अपने को नम्र करें और अपनी चाल को सुधारें। यदि सृष्टिकर्ता ने मेरे और आपके लिए अपने को नम्र किया है, यीशु को एक सेवक के रूप में भेजा, हमें भी अपने को नम्र करना चाहिए। मेरे प्रिय लोगों, इस क्रिसमस के समय में आइए सादे और सच्चे लोग बनें। यह संसार क्रिसमस के मसीह से दूर हो गया है। उसकी चरनी की देखभाल करने वाला कोई नहीं रहा। लोग उसके अद्भुत आगमन को किंवदतीं या पौराणिक कथा समझते हैं। लोग सोचते हैं कि क्रिसमस तो खाने पीने और नाच गाने का समय है 'किसलिए?' ''क्योंकि मैं स्वंय से प्रेम करता हूँ, मैं उद्धारकर्ता के जन्मदिवस की पार्टी पर उसे खुश नहीं करना चाहता।'' सारे संसार में यीशु के जन्मदिवस की पार्टी के समान कोई पार्टी नहीं होती।

यदि आप किसी जन्मदिवस समारोह में जाएँ, जिसका जन्मदिन है आप उसे शुभकामनाएँ देते हैं। परन्तु बहुतेरे मसीह के जन्मदिवस समारोह में मसीह को नहीं चाहते। ओह! कैसी दुर्दशा। सत्य का क्रिसमस से पूरा अलगाव।

यीशु की आराधना - यही क्रिसमस है। यीशु के मन को खुशी पहुँचाना। यह पूर्णरूप से संभव है, आओ यीशु के मन को खुशी पहुँचाएँ। - जोशुआ डानिएल।

पृष्ठ १ से...पैदा हुआ।

रूप में पैदा हुए कर सकते थे। वह ऐसे भी प्रकट हो सकते थे, जैसे पुराने नियम में परमेश्वर के दूत प्रकट हुआ करते थे और बिना मनुष्य का रूप लिए ऊपर दी गई कार्य सूची को पूरा कर सकते थे। लेकिन उनके आने में एक और उद्देश्य था - वह मरने के लिए आये।

यह क्रिसमस की कहानी का वह भाग है जो अधिकतर बताया नहीं जाता 'वे नन्हें कोमल हाथ, मरियम के गर्भ में पवित्र आत्मा द्वारा बनाए गए', वे इसलिए बनाए गए थे कि उनके अन्दर कीलें ठोंकी जाएँ। वे शिशु पैर, गुलाबी, न चलने योग्य, एक दिन पहाड़ी की धूल भरी राह पर क्रूस पर ठोंकने के लिए जाएँगें। वह प्यारा नन्हा सिर और चमकती आँखें और मुंह इसलिए बनाया गया था कि एक दिन लोग जबर्दस्ती उस पर काँटों का मुकुट पहनाएं। वह नाज़ुक शरीर, गर्म और कोमल चिथड़ों में लिपटा हुआ, एक दिन भाले द्वारा बेधा जाऐगा।

यीशु मरने के लिए पैदा हुए।

यह मत सोचिए कि मैं आपके क्रिसमस के उत्साह को ठंडा करना चाह रहा हूँ। यह कदापि नहीं - यीशु की मृत्यु हालाँकि लोगों के हाथों बुरे उद्देश्य से हुई, लेकिन वह कोई दुखान्त घटना नहीं थी। सच तो यह है वह बुराई पर किसी द्वारा पाई विजय में सबसे बढ़कर थी।

Beautiful Books

First Floor, Victoria Hotel
Near GPO
CST, Mumbai
Phone : (022) 5633 4763
9:30 AM - 7:00 PM

पृष्ठ २

अभिषेक के साथ कार्य

लूका (१:४२-४५,५२)'और उसने ऊंची आवाज़ में पुकारकर कहा, ''तू स्त्रियों में धन्य है, और तेरे गर्भ का फल भी धन्य है! मुझ पर यह अनुग्रह कैसे हुआ कि मेरे प्रभु की माता मेरे पास आई? देख, ज्यों ही तेरे नमस्कार का शब्द मेरे कानों में पड़ा, बच्चा मेरे गर्भ में आनन्द से उछल पड़ा। धन्य है वह स्त्री जिसने विश्वास किया कि जो कुछ प्रभु ने उस से कहा है वह पूरा होगा।...उसने राजाओं को सिंहासन से गिरा दिया और दीनों को महान् कर दिया।'' '

यहाँ पर एक नवयुवती नबूवत कर रही है। एक महिला जो उससे आयु में बड़ी थी उसे मरियम ''मेरे प्रभु की माता'' कह कर पुकार रही थी। अभी से मरियम को आदर मिल रहा था। इस प्रकार परमेश्वर नम्र व्यक्ति को आदर देते हैं। एलीशिबा, मरियम को देखकर अत्यन्त आनंदित हुई। उसने पवित्र आत्मा की भाषा का उपयोग किया। उसने बहुत सी बातों को पवित्र आत्मा से अभिषेक पाने के द्वारा समझा। यह दोनों परिवार रिश्तेदार थे तथा उच्च आत्मिक स्तर पर थे। यदि हम रेत का ढेर लगाएँ तो यह ढेर नीचे चौड़ा तथा ऊपर सकरा होगा। यहूदी देश ने परमेश्वर से वरदान पाए। लेकिन यह कुछ ही परिवार थे जिन्होंने अपने आत्मिक जीवन को ऐसे पाला कि उन वरदानों का उपयोग किया और विश्वास के विषय में देश के सबसे ऊँचे स्थान पर थे और परमेश्वर से संपर्क बनाए थे।

यह परिवार मानो स्वर्ग तक पहुँचे हों। जब माता-पिता आत्मिक होते हैं, कभी-कभार बच्चे और अधिक आत्मिक बन जाते है। बिना सच्ची सहभागिता के तुम आत्मिक लोग नहीं बन सकोगे। जोन वैस्ली की गम्भीर लोगों के साथ सहभागिता थी। एक दूसरे का विश्वास परस्पर सहायता कर रहा था।

मरियम ने कहा, ''अब से लेकर सभी पीढ़ियाँ मुझे आशिषित कहेंगी।'' उसे यह समझ आ गई थी कि वह एक विश्वस्तरीय महिला बन गई थी। यीशु ऐसी शक्ति लेकर आये जो लोगों को पवित्र जीवन बिताने योग्य बना सके। वह लोगों के लिए दुष्टात्माओं पर शक्ति रखने की सामर्थ लेकर आए। जब यीशु ने प्रचार के लिए अपने चेलों को भेजा, उन्होंने सबसे पहले चेलों को अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार दिया। यीशु इस संसार में शक्ति लेकर आए। इफिसियों(२:२)''जिनमें तुम पहिले इस संसार की रीति और आकाश में शासन करने वाले अधिकारी अर्थात् उस आत्मा के अनुसार चलते थे जो अब भी आज्ञा न मानने वालों में क्रियाशील है।''

यह दुष्ट आत्माएँ लोगों को पाप करने के लिए लगातार उकसा रही हैं। इब्रानियों (२:१४,१५)''अतः जिस प्रकार बच्चे मांस और लहू में सहभागी हैं तो वह आप भी उसी प्रकार उनमें सहभागी हो गया, कि मृत्यु के द्वारा उसको जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली है, अर्थात् शैतान को शक्तिहीन कर दे, और उन्हें छुड़ा ले जो मृत्यु के भय से जीवन भर दासत्व में पड़े थे।'' शैतान तुम्हें मृत्यु द्वारा डराना चाहता है। लेकिन यीशु ने मृत्यु का डंक दूर कर दिया। यीशु की मृत्यु पर सामर्थ है। शक्ति, आपको याद रहे, खतरनाक हो सकती है। बिना अच्छे चरित्र के शक्ति खतरनाक हो सकती है। आप इस शक्ति के विषय में सोचने की बजाय यीशु द्वारा आपके लिए लाए गए नये स्वभाव के विषय में सोचिए। जब आप परमेश्वर के वचन को तोड़ते हैं तो शैतान आपको गलत मार्ग में परीक्षा में डाल सकता है। आप परमेश्वर से सही मार्ग दर्शन तभी पाएँगे जब आप उनके वचन का पालन करेंगे। परमेश्वर कहते हैं कि वह हमें अपना पवित्र आत्मा देगें जो सारे सत्य में हमारी अगुवाई करेगा। हम मरियम में एक दिव्य स्वभाव को देखते हैं। नौजवानी में ही उसने दिव्य स्वभाव को पाया। हम यूसुफ, मरियम, ज़कर्याह और एलशीबा, युहन्ना बपतिस्मा देने वाला तथा यीशु के विषय में सोच कर कितना धन्य अनुभव करते है, जब हम इन लोगों के विषय में सोचते हैं तो हम अलग ही वातावरण में उठा लिये जाते हैं।

यीशु हमारे लिए नया स्वभाव लाए। आपके विचार स्वर्ग तक उठ कर परमेश्वर के हृदय को आनंदित करते हैं। यीशु ने अपने चेलों को नया स्वभाव देकर मनुष्यों का मच्छुआरा बनाया। जितना अधिक आप परमेश्वर के स्वभाव को जानने की गहराई में जाते हो, तुम्हारी प्रार्थना उतनी ही अधिक शक्तिशाली बनेगी यिर्मयाह (९:२३,२४)'यहोवा यों कहता है, ''बुद्धिमान अपनी बुद्धि पर घमण्ड न करे, न बलवन्त अपने बल पर, और न ही धनवान अपने धन-सम्पत्ति पर गर्व करे; परन्तु जो गर्व करता है वह इस बात पर गर्व करे कि वह मुझे जानता और समझता है, और यह भी कि मैं ही वह यहोवा हूं जो पृथ्वी पर करूणा, न्याय और धार्मिकता क कार्य करता हूं, क्योंकि मैं इन बातों से प्रसन्न होता हूं'', यहोवा की यही वाणी है।' मसीह आपको धरती तथा स्वर्ग के परमेश्वर का ज्ञान देने के लिए आये।

- स्वर्गीय श्रीमान एन दानियल।

सत्य की परख!

युहन्ना (३:१६)''क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया कि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए।''

पृष्ठ ३

सेबों की फसल काटना

अपने वैवाहिक जीवन के पहले बीस साल हमनें चार अलग-अलग घरों सें बिताए। वे काफी सुन्दर घर थे, लेकिन एक में भी बगीचे का स्थान नहीं था। अपने पाँचवें घर में आने का हमें बहुत आनंद हुआ क्योंकि इसमें ने केवल बगीचा बल्कि तीन फलदायक सेब के पेड़ भी थे।

पहले पतझड़ के मौसम ने सेब की बड़ी फसल होते देखी और हमने यह ठान लिया था कि जितना संभव हो उतने सेब संभाल कर रखेंगे। उन्हें चुनने के बाद सावधानी से, एक एक कर अखबार के कागज़ों में लपेट कर लकड़ी की तश्तरी में, एक के ऊपर एक गैराज़ में रख दिया, क्योंकि हम उन्हें क्रिसमस के त्यौहार के समय उपयोग करना चाहते थे। इन सेबों की सोचते हुए हमें सर्दी के समय का इंतजार था। लेकिन क्रिसमस आने तक सारे सेब सड़ गए। मैंने इस बारे में अपने एक किसान मित्र से बात की और उसने कहा कि मैंने उन्हें समय से पहले तोड़ लिया था।

मैंने अपनी बात पर जोर देते हुए कहा कि वे पके हुए दिख रहे थे। ''हाँ'',उन्होंने कहा,''क्या वह आसानी से बिना जोर लगाए तोड़े जा सके?'' उन्होंने विस्तार से यह बताया कि सेब पेड़ से तभी तोड़े जाने चाहिए, जब वह बिना ज्यादा जोर लगाए आसानी से तोड़े जा सकें। ''यदि तुम्हें जोर लगाना पड़े तो उन्हें छोड़ दो'', उन्होंने कहा,''वे तोड़ने योग्य नहीं हैं और वह तोड़ने पर सड़ जाएँगें।''

यह सेब तोड़ने के विषय में सलाह बड़ी उचित थी, लेकिन साथ ही यह आदमी तथा औरतों की आत्माओं का ध्यान रखने के लिए भी उचित सलाह है। कितनी बार कलीसिया में हम बहुत आनंदित होते हैं, जब लोग मसीह पर अपने विश्वास को लाने की घोषणा करते हैं, लेकिन थोड़े ही समय में यह स्पष्ट हो जाता है कि उनका उद्धार नहीं हुआ है और वे कलीसिया आना बंद कर देते हैं। यह परमेश्वर का अत्यंत निरादर है। साथ ही यह हम मसीही लोगों के लिए निराशा और कुंठा की बात है और साथ ही वह लोग जिन्होंने अपना विश्वास लगाया था, अब सुसमाचार के विरूद्ध बहुत कठोर बन जाते हैं। वह कहते हैं, ''मैंने उद्धार पाया लेकिन उसका कोई असर नहीं है।''

यह एक सच्ची समस्या है। आधुनिक 'निमंत्रण' प्रणाली इसको और अधिक बिगाड़ देती है, लेकिन ऐसी कलीसियाओं में जो इस प्रणाली का उपयोग नहीं करते और आत्माओं की अधिक देखभाल करते हैं, वहाँ भी ऐसा पाया जाता है। ऐसा क्यों होता है?

अधिकतर, जैसे सेबों के साथ, अज्ञानता के साथ हमारा उत्साह ही इसका कारण है। हम आत्माओं का उद्धार देखने के लिए इतने तत्पर होते हैं कि बाइबल के मूल सिद्धांतों को भूल बैठते हैं। इसका यह असर होता है कि हम लोगों को पूरी तरह से तैयार होने से पहले ही निर्णय दिलवा देते हैं। हम यह कैसे जाने कि आत्मिक फल चुनने का सही समय कब है?

सर्वप्रथम, हमें यह हमेशा याद रखना चाहिए कि सच्चा परिवर्तन आदमी के निर्णय पर नहीं बल्कि पवित्र आत्मा के कार्य पर निर्भर करता है। इस दिव्य कार्य के चिह्न हमें नज़र आएँगें। हम प्रेरितों के कार्य (११:२३) में पढ़ते हैं कि बारनबास ने वहाँ पर परमेश्वर के अनुग्रह के सबूत को देखा। मुख्य सबूत है, पाप का बोध, जो पश्चात्ताप की ओर लेकर जाता है। इसके बिना उद्धार संभव नहीं है। पाप के बोध का जोर, एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में अलग-अलग हो सकता है, लेकिन इसका होना बहुत ज़रूरी है।

पिछली पीढ़ियों में मसीही लोग आत्मा के जागने और उद्धार में अन्तर रखते थे। 'जागने' से उनका अर्थ था कि पवित्र आत्मा ने उनके अन्दर कार्य आरंभ कर दिया है। पाप का बोध होना आरंभ हो जाता है और माफी पाने की चाह उनके अन्दर पैदा होती है। लेकिन यह अब भी परिवर्तन नहीं है। शायद आज भी हमें इस अन्तर को रखना चाहिए और कार्य में जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए, जो पवित्र आत्मा ने आरंभ किया है।

इसका यह अर्थ नहीं कि हम खाली बैठ जाएँ और कुछ न करें। यदि आप देखें कि परमेश्वर किसी व्यक्ति की आत्मा को जगा रहें हैं, तो उनके लिए प्रार्थना कीजिए, उनकी सहायता कीजिए और सलाह दीजिए, लेकिन पवित्र आत्मा को अपना खास काम करने दीजिए। जब वह पक जाएँगें, वह आसानी से तोड़े जाएँगें और कोई जोर देने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।

पवित्र आत्मा द्वारा तोड़ी गई फसल में कोई सड़ने वाले सेब नहीं मिलेंगे।

-चुना हुआ।

कृपया पढ़ने के पश्चात मित्रों को दीजिए।